श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष- अभ्यास - १०

प्रश्न - पत्र

मार्च - २०२०
गुणांक - १००

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. ..... नींद नहीं करनी चाहिये ।
२. ..... जहाँ नजर पडे वहाँ से गुणों को ही ग्रहण करे ।
३. हम जिस ..... में रहते हैं, उसमें भी अनेकानेक शाश्वत, अशाश्वत पदार्थ रहे है ।
४. जो पर्व तिथि आदि देखकर भोजन के लिये आयें उन्हें..... कहते हैं ।
५. साधु या श्रावक जीवन की सफलता ..... में रही है ।
६. यदि तुम परम पदकी इच्छा करते हो तो तीन लोक का उद्धार करने वाले ..... में श्रद्धा रखो ।
७. राजगृही के कौडिन्य गोत्र ..... बलभद्र प्रभास के पिता थे ।
८. निषध पर्वत ..... जाति के लाल सुवर्ण का है ।
९. चाहे जैसी कसोटी में धर्म में स्थिर रहे वह ..... है ।
१०. साधु की गोचरी करने का समय अतिक्रम करके ..... की निमंत्रण करने जाये तो कालातिक्रम जानना ।
११. जीवन है, सभी के बीज सुख से बैठा व्यक्ति कब काल का ग्रास बन जायेगा इसकी खबर नहीं ।
१२. देह रहित, जन्म मरण रहित आत्मा की ..... मानने को तैयार नहीं थे ।
१३. श्री जिनेश्वर भगवान की पूजा करने से ..... क्षय हो जाते हैं ।
१४. .....बिना का शुभनामकर्म बांधे ।
१५. समाधि मर पाने के लिये ..... बनना पडेगा ।
१६. ..... व्रत के लिये चोविहार उपवास के साथ आठ प्रहर का पौषध करना होता है ।
१७. चल सूर्य चंद्र की गति के कारण ..... गिनती होती है ।
१८. अकारण दिन में नहीं सोना चाहिये उससे ..... प्रमाद में वृद्धि होती है ।
१९. कर्म विपाक नाम का ग्रंथ ..... ने लिखा है ।
२०. ग्यारह गणधरों ने त्रिपदी पाकर ..... की रचना की ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो -

१. कुसमय निद्रा करने से किसका नाश होता है ? १५
२. प्रभास गणधर ने वेद-वेदान्त के साथ किसका अभ्यास किया था ?
३. प्राणीओं के तीव्र ताप की शांति के लिये किसका स्मरण किया जाता है ?
४. श्रावक जीवन के अणुव्रतो का सुंदर पालन करने से कौनसा कर्म बंधता है ?
५. जिस क्षेत्र में सेकंड, मिनिट, रात दिन आदि काल प्रवर्तता है उसे कौनसा क्षेत्र कहते हैं ?
६. संयति के लिये अन्न पानी रुप द्रव्य का विभाग करना उसे क्या कहते हैं ?
७. किसकी अनुमोदना करने से पुण्य में वृद्धि होती है ?
८. धर्म के प्रभाव से परभव में इन्द्र अथवा चक्रवर्ती की पदवी मिले ऐसा अभिलाष करना उसे क्या कहते हैं ?
९. अविरत सम्यगदृष्टि जीव किस गति का आयुष्य बांधते है ?
१०. प्रभु महावीर ने गच्छ की अनुज्ञा किसे दी ?
११. मेरु पर्वत के सिवा सभी मुख्य पर्वत स्वयं की ऊँचाई से जमीन में कितने गहरे होते है ?
१२. कितने हेतुओं से जीव दर्शन मोहनीय कर्म बांधता है ?
१३. श्रावक के घर भोजन के समय अचानक आये उन्हें क्या कहते हैं ?
१४. भरत महाराजा ने खास सेवक किस लिये रखा था?
१५. वीर प्रभु के पास सुगंधी चूर्ण लेकर कौन खडा रहा ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) दुसउच्चा २) इअ ३) प्रयांतु ४) रइया ५) पओस ६) मुग्ग ७) मयरहियो ८) वेरुलिओ ९) निद्धंत
१०) अेयं ११) सायमसायं १२) मज्जिम १३) यस्य १४) पव्वयवरा १५) भुरुहाणां १६) पन्नतं १७) सम्मता
१८) वयणस्स १९) सकोसे २०) इयर

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) निदान	१) अनुमोदना	६) रुक्मि	६) योग
२) श्रुति	२) करुणा	७) क्षमा	७) चक्रवर्ती
३) अविरति	३) गुण	८) निंदा	८) शल्य
४) इन्द्र	४) अभ्यागत	९) अतिथि	९) परव्यपदेश
५) मत्सर	५) शिखरी	१०) द्रव्य	१०) स्मृति

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो -

१. श्रीमद् हरिभद्रसूरि ने लघु संग्रहणी की रचना कितने द्वारों से की है ?
२. सभी कर्म के पेटा भेद कितने ?
३. नीलवंत पर्वत की ऊँचाई कितनें योजन है ?
४. प्रभास गणधर ने संयम स्वीकार किया तब उनकी उम्र कितनी थी ? १०
५. संलेषणा व्रत के कितने अतिचार लग सकते है ?
६. शातावेदनीय कर्म कितने आचारों से बांध सकते है ?
७. सुवर्ण कला नदी के मुख का विस्तार कितने योजन है ?
८. बार हवें व्रत में श्रावक को कितने प्रहर का पौषध करना रहता है ?
९. नाम कर्म की कुल प्रवृति कितनी ?
१०. प्रभास गणधर कितने शिष्यों के साथ दिक्षित हुए ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✔) हैं या गलत (×) बताओ -

१. साधु को देने योग्य अन्नपान आदि न देने की बुद्धि से पान, फल, फूल के उपर रखा हो तो सचित पिधान अतिचार लगता है ।
२. पश्चिम दिशा में मस्तक रखकर सोने से चिंता होती है ।
३. जो कोई भी मोक्ष का अर्थी हो उससे जीवनभर अग्निहोत्र करना । १०
४. जिनेश्वर प्रभु, मुनिराज, चैत्य, श्रीसंघ के विरोधी चारित्र मोहनीय कर्म बांधते है ।
५. सद्गति की परंपरा के लिये सागारी अणसण का भी स्वीकार करना पडेगा ।
६. रुक्मि पर्वत रजत से बना है ।
७. गुढ हृदयवाला, शठ शल्यवाला, भयंकर अद्यवसायवाला जीव नरक गति का बंध करता है ।
८. धर्ममय स्वप्न पाने के लिये धर्म वैराग्य भावना से भावित होकर वैराग्य वासित चेतना करके निद्राधीन होना ।
९. ढाई द्वीप के बाहर सूर्य, चंद्र स्थिर होने से रात दिन का भेद होता नहीं ।
१०. श्री जिनेश्वर परमात्मा की पूजा करने से आधि,व्याधि, उपाधि क्षय (नाश) हो जाती है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो -

१. जिनादि का भक्त उनकी पूजा अर्चा भक्ति ओर वैयाव्च करनेवाला होता है ।
२. अपने प्रतिक्रमण को ज्यादा से ज्यादा शुद्ध बनाने के लिये जागृत बनना है । १०
३. साधक आत्मा साधना की पगडंडी पर इस निद्रा को घटाने और सुधारने सतत प्रयत्नशील होते हैं ।
४. देव वाद्यों के शब्द बंध करके सावधान होकर सुनने लगे ।
५. अपनी आत्मा ने अनंत बार इन सभी कर्मो के विपाक भोगे हैं ।
६. यह चीज हमारी तो नहीं पर हमारे भाई की है ।
७. स्वयं के पास जो सामग्री हो वह दूसरे के परोपकार के लिये देना, उसका त्याग करना वह दान है ।
८. जिनके जन्म मरण नाश हो गये हैं, ऐसे देवाधिदेव अर्हंत भगवन्तो को नमस्कार हो ।
९. यह समय क्षेत्र ढाई द्वीप प्रमाण है, यही क्षेत्र मनुष्य क्षेत्र के नाम से पहचाना जाता है ।
१०. साधु का जीवन शुद्ध बने इसके लिये आहार शुद्धि तो जरुरी है, पर साथ साथ आहार वहोरने में भी शुद्धि जरुरी है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ -

१. संलेषणा व्रत २) शातावेदनीय कर्म बंध के मुख्य आचार १५
३. निद्रा से पहले श्रावक के कर्तव्य ४) पर्वतों का प्रमाण और रंग
५. वीर प्रभु द्वारा गणधरो की स्थापना और अनुज्ञा

उत्तर पत्र लिखे पते पर भेजिए : सौ. काश्मीरा विनोद लोडाया
शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबद (महा.) ४३१ ००१
सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.achalgach.com